हिन्दी Hindi Class 12 Important Question Chapter 17 कुटज

1. सुख और दुःख मन के भाव है? पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर: लेखक कहता है की अगर व्यक्ति के मन और उसमे उठने वाले भाव उसके वश में है, तो वह सुखी कहलाता है और सुखी हो भी सकता है। क्योंकि कोई इच्छा उसको कष्ट नहीं दे सकता है। दुखी तो वह है, जो दूसरों के कहानुसार चलता है या जिसका मन ख़ुद के वश में नहीं होता है। वह दूसरे के हाथ की कठपुतली समान व्यवहार करने लगता है, अथार्थ दूसरों को ख़ुश करने हेतु सभी कार्य करता है। इसलिए लेखक दुःख और सुख को भन का भाव मानता हैं।

2. लेखक कूटज के पेड़ को बूरे दिनों का साथी मानता है, क्यों?

उत्तर: लेखक कूटज को एक ऐसा साथी मानता है, जो बुरे दिनों में साथ रहता है। जब यक्ष को रामगिरि पर्वत पर बादल से अनुरोध करने हेतु भेजा था, तो वहाँ कूटज पेड़ विदयमान था। उस समय में कूटज के फूल ही काम आए थे। एक ऐसे स्थान पर जहाँ दूब तक पनपता, वहाँ यक्ष ने कूटज के फूल चढ़ा कर मेघ को प्रसन्न किया था। इसको कालिदास ने अपनी रचना में लिखा है। इसलिए लेखक ने कूटज को बुरे दिनो का साथी माना है।

3. "कूटज, कूट और कुटनी" इन शब्दों से लेखक का आशय स्पष्ट करे।

उत्तर: लेखक हज़ारी प्रसाद जी के अनुसार 'कूट' शब्द के दो अर्थ बताए है- 'घर' या 'घड़ा' । इसी आधार पर उन्होंने 'कूटज' शब्द का अर्थ 'घड़े से उत्पन्न होने वाला' बताया। असल में यह नाम मुनि अगस्त्य का दूसरा नाम है। माना जाता है की उनकी उत्पत्ति घड़े से हुई थी। अगर 'कूट' शब्द की ओर ध्यान दिया जाए तो 'कूट' शब्द का मतलब घर होता है। तो लेखक ने घर में देखरेख का कार्य करने वाली बुरी आदतों की दासी को कुटनी कहा है। लेकक कही न कही इन तीनों शब्दों को एक कड़ी में जोड़कर ज़रूर देखता है।

4. कूटज के पेड़ से हमें क्या शिक्षा मिलती है? टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: कूटज के पेड़ से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें विकट स्थितियों में अपना साहस रखते हुए मनोबल नहीं गिरने देना चाहिए। हमें धैर्य से काम लेते हुए विकट परिस्थितियों में कठिन परिश्रम करते हुए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। जब हम ऐसा करने में सफल होते है, तो मुश्किलों से भरा रास्ता भी आसानी से तय हो जाता है। मुश्किलों के दौर से गुज़रा व्यक्ति सोने की भाँति भट्टी से तपकर निखरकर बाहर आता है। एक बार अपने मेहनत और भुजाबल की शक्तियों से खड़े व्यक्ति को किसी प्रकार की परिस्थितियाँ झुका नहीं सकती।

5. कूटज के जीवन से हमें बहुत सीख मिलती है। टिप्पणी करे।

उत्तर: कूटज के जीवन से मिलने वाली शिक्षाएँ निम्नलिखित है-

(क) गर्व से सिर उठा कर जिन चाहिए।

(ख) मुश्किलों में घबराना नहीं चाहिए।

(ग) कभी भी हमें हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए।

https://www.evidyarthi.in/

(घ) मुश्किल परिस्थितियों का डटकर सामना करना चाहिए।

(ड) लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहना चाहिए।

(च) स्वावलंबी बन, दूसरों के सामने मदद हेतु नहीं झुकना चाहिए।

(छ) जो मिले उसे सहजता के साथ अपना लेना चाहिए

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (5 अंक)

6. 'नाम' के सम्बंध में लेखक का क्या मानना है?

उत्तर: लेखक कहते है कि नाम का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। नाम ही मनुष्य की पहचान होती है। यदि किसी व्यक्ति का नाम ना हो, तो उसके रूप, रंग, आकार आदि का वर्णन हो जाने के बावजूद भी हम उसे भली – भाँति नहीं पहचान पाएँगे। अगर किसी मनुष्य का नाम याद ना हो तो उसके चेहरे को पहचान लेने के बाद भी उस मनुष्य की पहचान अधूरी सी लगती है। उसको समाज के लोग भी उसके नाम से ही जानते है। नाम ही समाज द्वारा स्वीकृत है। चाहे मनुष्य कितना भी सुंदर हो यदि उसका नाम नहीं है तो उसको लोग पहचानने से इंकार कर देंगे। नाम ही मनुष्य की पहचान है। अगर हम ग़ौर करे तो पायंगे सभी प्राणीयों और वस्तुओं के लिए एक नाम ज़रूर दिया गया है। इस नाम के आधार पर ही उसे पहचानना सरल हो जाता है। सिर्फ़ उसका नाम सुनके हमें उसके रूप, दोष, आकार, गुण, रंग, धर्म, जाति इत्यादि सबका बोध हो जाता है।

7. 'कूटज' कभी हार नहीं मानता' पाठ के आधार पर इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर: कूटज का पेड़ ऐसे प्रतिकूल वातावरण में गर्व सिर उठाए जीवित खड़ा है। जहाँ पर दूब भी अपना क़ब्ज़ा नहीं जमा पाती। ऐसी जगह पर कूटज के पेड़ का खड़े रहना और फलना फूलना, उसके हार ना मानने के गुणों की घोषणा करता है। वह यहाँ ही नहीं बल्कि पहाड़ों की बड़ी-बड़ी चट्टानों के मध्य ख़ुद को खड़ा रखता है। तथा उसके अंदर के जल- श्रोतों से स्वयं के लिए जल ढूँढ निकालता है। ऐसे जगहों में वह विजयी खड़ा है। यह कितनी विकट परिस्तिथि है, जिसमें साधारण पेड़ पौधों का जीवित रहना असम्भव है। उसकी इस प्रकार की जीवनी शक्ति को देख हम कह सकते है कि वह कभी हार नहीं मानता। उसके अपने जीवन जीने के प्रति उसका प्रेम और ललक, उसे कभी न हारने वाला बना देती है। वह बुरी से बुरी परिस्थिति सीना तान गर्व से सिर को उठा, अपना जीवन जीता रहा है।

8. कूटज के साहस के समक्ष मानवीय कमज़ोरियों की तुलना करिये।

उत्तर: लेखक के अनुसार कूटज का वृक्ष सिर्फ़ जीता ही नहीं है अपितु वह यह सिद्ध कर देता है कि यदि इंसान में जीवन को जीने की ललक हो, तो वह किसी भी प्रकार की बुरी परिस्थितियों से ख़ुद को सरलतापूर्वक उभार सकता है। वह मेहनत कर, अपने गौरव तथा आत्मसम्मान दोनों की रक्षा करता है। दूसरे के भरोसे न जीकर ख़ुद के साहस से जीता है। लेखक कहता है कि कूटज के स्वभाव से यह बात सिखने वाली है कि वह सिर्फ़ जीने के लिए नहीं जी रहा है। उसके अंदर इसके लिए दृढ़ विश्वास है। लेकिन अगर हम मानवों को देखे, तो वह थोड़ी सी कठिनाइयों के आगे अपने घुटने टेक देते है। बहुत से ऐसे इंसान है, जिनके पास जीने की वजह ही नहीं होती, वह बस जीने के लिए जीते है।असल में ऐसे लोगों में साहस के साथ-साथ जीने की लालसा कम होती है। ऐसे लोगों को कूटज के पेड़ से अपनी तुलना कर सीख लेनी चाहिए।

9. स्वार्थ हमें ग़लत मार्ग पर ले जाता है। लेखक के भाव को उदाहरण के साथ स्पष्ट करें।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर: लेखक कहता है कि निजी स्वार्थ हमें अनुचित मार्गों पर लेकर चला जाता है। इस स्वार्थ में निहित मनुष्य ने गगनचुंबी इमारतें बनाई, सागर में बड़े-बड़े पुल बनाए, बड़े-बड़े पानी के जहाज़ बनाए, विमान बनाया। इंसानो के अंदर स्वार्थ की कोई सीमा नहीं है, यह कभी न समाप्त होने वाली, अनंत तक जाती है। अपने जीवन को जीने या यूँ कहिए की रोज़ी-रोटी के कारण ही हम जीने के लिए प्रेरित होते रहते है। लेकिन इन्हीं दोनों कारणों से हम ग़लत मार्ग का चुनाव कर लेते है। हम स्वयं को इतना महत्व देते है की भूल जाते है, हम क्या कर रहे है। लेखक से अनुसार इंसान को सबकी भलाई के बारे में सोचना चाहिए इसमें वह शक्ति है, जो बहुत विराट है।जब इंसान सर्व शक्ति को स्वीकार करता है, तो वह सम्पूर्ण जातियों का कल्याण कर पाने के सक्षम हो जाता है। अगर इंसान में निजी स्वार्थ ना हो, तो उसके अंदर से अहंकार, लोभ-लालच, स्वार्थ, क्रोध इत्यादि नाम मात्र रह जाते है। जो इन सभी चीज़ों से निकलकर बाहर आता है, वह इंसान ही महान कहलाता है। बुद्ध, गुरुनानक, अशोक, महात्मा गांधी इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

10. मुश्किल परिस्थितियों से गुज़रकर निकले लोग अक्सर बेहया हो जाते है। क्यों? और कैसे? पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर: इस पाठ में लेखक कूटज को भी बेहया ही बताते है, जैसे कूटज का पेड़ किसी भी जगह, किसी भी परिस्थिति में फल-फूल जाता है। वैसे ही विकट परिस्थितियों से लड़ने के कारण मनुष्य भी स्वभाव से बेशर्म और बेहया हो जाता या यूँ कहें उसमें किसी चीज़ की शर्म नहीं रह जाती है। लोग कैसे भी माहौल में ख़ुद को ढालकर, मौन हो, अपना काम शांति से कर ले जाते है। जैसे पहाड़ों के बीच, कम में शान से खड़ा कूटज का पेड़ बेहया होकर, अपने जीवन के अस्तित्व को बचाने के लिए लड़ते रहकर ख़ुद को विजेता साबित कर लेता है। इसीलिए लेखक कहता है कि बेहया होने का स्वभाव ही उनकी रक्षा करता है और उन्हें मज़बूती से खड़े रखने में मदद करता है। ऐसे लोग अपनी दृष्टि में सही होते हुए अपना रास्ता खोजकर आओगे बढ़ते जाते हैं।

https://www.evidyarthi.in/